कुमारसम्भव महाकाव्य में वर्णित पर्यावरण-चिन्तन

डॉ0 सन्तोष कुमार मिश्र

श्री लाल बहादुर शास्त्री

इ0का0, चायल कौशाम्बी

मो0 नं0: 09415841905

E-mail ID: skmishra779@gmail.com

विगत कुछ वर्षों से विश्व–समुदाय पर्यावरण–असन्तुलन के प्रति संवेदनशील हुआ है। आज हम प्रकृति की विभीशिकाओं से यह सोचने के लिए बाध्य हो गये हैं कि प्रकृति से छेड़छाड़ मानव–अस्तित्त्व के लिए हानिकारक है। हम अपनी प्रगति–उड़ान में यह भूल गये कि सृष्टि जड़ और चेतन के उचित सामंजस्य पर ही टिकी है। हमने पूर्वजों के उन अनुभवों को दरकिनार कर; जिसमें वे प्रकृति को अपना सहचर मानकर अपने सुख–दुःख बाँटा करते थे, उनका अपमान ही नहीं किया, बल्कि अपने जीवन का संकट उत्पन्न कर रक्खा है।

जून 2013 में उत्तराखण्ड की त्रासदी और अब जम्मू/कश्मीर की भयावह बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ हमें निरंतर चेतावनी दे रही हैं। मानव की भोगात्मक प्रवृत्ति से पर्यावरण का प्रत्येक अंग असंतुलित हुआ है। ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल कूलिंग, ब्लैक होल, भूकम्प, हिमस्खलन, सुनामी आदि समस्याएँ प्रकृति के कुपित रूप का ही परिणाम है।

वस्तुतः **'परितः आवृयतेऽनेनेति पर्यावरणम्।'** इस व्युत्पत्ति के अनुसार वे समस्त जैविक एवं अजैविक घटक, जो हमारे वातावरण में सन्निहित हैं, पर्यावरण कहे जाते हैं। अतः सूर्य (अग्नि भी), पृथ्वी, जल, वायु, आकाश ये सभी पर्यावरण के अंग हैं। प्राणिजगत् का जीवन पर्यावरण पर ही आधृत है। पर्यावरण के साथ–साथ ही हमारी जीवन–यात्रा पूर्ण होती है। इसीलिए वैदिक ऋषियों ने प्रकृति में दैवी आधान कर उसकी स्तुति की।

लौकिक संस्कृत–साहित्य में भी इन प्राकृतिक तत्त्वों के प्रति पूज्य भाव एवं सहानुभूति प्रदर्शित की गयी है। कालिदास जैसा कवि तो प्रकृति में ही जीता है। उसके सभी काव्य प्राकृतिक संवेदन से सम्पृक्त हैं। मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तल, कुमारसम्भव जैसे काव्यों का कथानक तो प्रकृति के इर्द–गिर्द ही घूमता है।

कुमारसम्भव महाकाव्य में हिमालय के सुन्दर वर्णन, पार्वती, के जन्म के समय की प्रकृति, वसन्त की शोभा, विभिन्न शैल–शिखर, नदियों आदि के शोभन कथन द्वारा पर्यावरण की शुद्धता एवं प्रकृति की सुन्दरता पर बल के साथ ही तारकासुर द्वारा प्रकृति की क्षति, मसलन, नन्दन–वन की कटाई, अमरावती की दुर्दशा आदि के

वर्णन द्वारा पर्यावरणीय चिन्तन ही कवि को अभिप्रेत है।

हिमालय का प्राकृतिक सौंदर्य अप्रतिम है। वह औषधियों, रत्नों, बर्फ एवं विभिन्न नदियों का उद्‌गम–स्थल है। वहाँ देवदारु के चूते हुए दूध से सुगन्धित वायु बहा करती है। विशुद्ध वायु, जिसमें गंगा के झरनों के जल–कण मिले हों, जो देवदारु के वृक्षों को कँपा रहा है, तथा मोर–पंखों को विकसित कर रहा है, मृगों के अन्वेशण से थके किरातों की थकान मिटाने में पूर्णतः समर्थ है–

'भागीरथीनिर्झरसीकराणां वोढा मुहुः कम्पितदेवदारुः।

यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिखण्डिबर्हः।।'[1]

वायु को साक्षात् प्राण कहा गया है।[2] यह जीवनदायक तत्त्व है। अतः इसका शुद्ध होना नितान्त आवश्यक है। कालिदास ने जहाँ हिमालय के रमणीय वर्णन में वायु का मनमोहक वर्णन किया, वहीं पार्वती के जन्म[3], कार्तिकेय के जन्मोत्सव[4] एवं गंधमादन पर्वत की स्वच्छ–सुगन्धित वायु[5] के वर्णन द्वारा हमारे अंदर वास्तविक प्राण–संचरण किया है।

वस्तुतः प्राचीन समय में वायु–प्रदषकों में प्रायः धूलि–कणों की प्रधानता थी। आँधी एवं युद्धादि के अवसर पर धूल उड़ने से वायु प्रदूषित हो जाती थी। तारकासुर के वध के लिए निकली देवसेना से उठी धूल की भयावहता का वर्णन कुमारसम्भव के चतुर्थ सर्ग में अनेकशः देखा जा सकता है।[6]

कवि वृक्ष एवं वनों के प्रति भी संवेदना रखता है। वृक्षों की कटाई से वातावरण में कॉर्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे हमारे शरीर को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती। अब तो केवल 8 प्रतिषत भू–भाग पर ही वन बचे हैं, जो चिन्तनीय है। वृक्षों के विनाश को देखकर कौन ऐसा होगा, जिसको क्रोध न आये। कुमार कार्तिकेय ने जब तारकासुर द्वारा विध्वंस किये गये इन्द्र के वन को देखा तो क्रोध के कारण उनकी आँखें लाल हो गयीं और भ्रुकुटियों के तन जाने से उनका मुख्य द्रुश्प्रेक्ष्य हो गया–

'सुरोद्विशोपप्लुतमेवमेतद्वनं बलस्य द्विशतो गतश्रि।

इत्थं विचिन्त्यारूणलोचनोऽभूदभ्रूभÂदुश्प्रेयमुखः।।'[7]

यहाँ कवि का पर्यावरण के प्रति अगाध प्रेम द्रश्टव्य है। प्रकृति एवं मानव के तादात्म्य एवं परस्पर निर्भरता से प्रभावित होकर कवियों ने उनके रूप एवं भावों को एक दूसरे पर आरोपित किया है। कालिदास को तो इसमें विलक्षण नैपुण्य हासिल है। एक सुन्दर उदाहरण देखिए–

'आवर्जिता किंचिदिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्।

पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव।।'[8]

पार्वती प्रातःकालीन सूर्य–प्रभा की तरह रक्तवर्ण की साड़ी पहने हुई हैं। वे स्तनों के भार के कारण कुछ झुकी हुई चल रही हैं। ऐसा लगता है, जैसे फूलों के भार से लटकने वाली नये–नये कोमल पल्लवों से युक्त चलने वाली लता हो।

पर्यावरण में जल का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। शुद्ध जल महौषधि कहा गया है।[9] उसमें अमरता का गुण है।[10] कुमारसम्भव में कवि ने तारकासुर द्वारा मंदाकिनी के स्वर्ण कमलों को उखाड़ लेने से बचे गंदे जल[11] तथा नदियों को धूलि एवं मद–जल से दूषित[12] हो जाने के उल्लेख द्वारा जल–प्रदूषण पर दृष्टि डाली है। इस समय तो नदियों का जल औद्योगीकरण द्वारा अधिक दूषित हो गया है। मेरी एक कविता की निम्नलिखित पंक्तियों में यह भाव देखा जा सकता है–

'औद्योगीकरण ने

तोड़ डाली है–

कमर जिसकी,

वह जल–प्रवाहिका

अपने दुर्भाग्य पर

दो बूँद आँसू भी नहीं बहा पाती।'

इसी प्रकार कवि ध्वनि–प्रदूषण की भयंकरता की भी चर्चा करता है। जब तारकासुर का नाश करने के लिए कुमार की सेना निकलती है, तो नगाड़े की प्रतिध्वनि आकाश में व्याप्त होते ही गर्भवती दैत्य–स्त्रियों के गर्भपात होने लगते हैं–

'प्रमध्यमानाम्बुधिगर्जितर्जनैः सुरारिनारीगणगर्भपातनैः।

नभश्चमूधूलिकुलैरिवाकुलं ररास गाढं पटहप्रतिस्वनैः।।'[13]

ऐसे ही वज्रपात की ध्वनि भी कान के पर्दे को फाड़ देने वाली है।[14]

प्रस्तुत महाकाव्य में सूर्य, चन्द्र, आकाश, दिशाओं आदि के सौंदर्य और निर्माल्य–कथन द्वारा कवि को पर्यावरणीय चिन्तन ही अभिप्रेत है। अंत में केवल एक श्लोक ही पर्याप्त होगा, जिससे कवि के पर्यावरण–प्रेम का स्पष्ट प्रमाण मिल जाता है–

'वाता ववुः सौख्यकराः प्रसेदुराशा विधुमो हुतभुग्दिदीपे।

जलान्यभूवन्विमलानि तत्रोत्सवेऽन्तरिक्षं प्रससाद सद्यः।।'[15]

अर्थात् कार्तिकेय के जन्मोत्सव–काल में वायु सुखद चलने लगी, दिशाएँ प्रसन्न हो उठीं, अग्नि धुएँ से रहित हो प्रदीप्त हो उठी, सरित्, सरोवरादि के जल निर्मल हो गये। किं बहुना आकाश भी प्रसन्न दिखाई देने लगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि कुमारसम्भव महाकाव्य के वर्ण्य–विषय का परोक्ष उद्देश्य पर्यावरण पर ही केन्द्रित है। कवि ने तारकासुर द्वारा तहस–नहस किये गये पर्वतों, नदियों, वनों, उपवनों आदि के वर्णन द्वारा यह संदेश दिया है कि पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले दैत्यों का संहार करने वाली एक अपूर्व शक्ति का प्रादुर्भाव आवश्यक है।

सन्दर्भ स्रोतः–

1. कुमारसम्भव, 1.15
2. **'प्राण इति वृत्तिमाना ध्यात्मिकोऽन उक्तः।'** –वृहदारण्यकोपनिशद्, 1.5.3 का शांकरभाष्य
3. कुमारसम्भव, 1.23
4. वही, 11.37
5. वही, 6.46
6. वही, 14.34,35,36,37,38
7. वही, 13.34
8. वही, 3.54
9. अथर्ववेद, 6.23.1–3
10. **'अप्स्वन्तरमृतम्।'**–ऋग्वेद, 10.23.19
11. कुमारसम्भव, 2.44
12. वही, 14.43
13. वही, 14.18
14. वही, 15.22
15. वही, 11.37

डॉ0 सन्तोष कुमार मिश्र

श्री लाल बहादुर शास्त्री

इ0का0, चायल कौशाम्बी

मो0 नं0: 09415841905

E-mail ID: skmishra779@gmail.com